4. बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म की स्थापना गौतम बुद्ध द्वारा की गयी थी। उनका जन्म 563 ई.पू. नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक ग्राम में हुआ था। वे शाक्य क्षत्रिय कुल के थे। वे कुलीन परिवार में जन्म लिए थे। सिद्धार्थ इनका बचपन का नाम था। इनकी पत्नी का नाम यशोधरा तथा पुत्र का नाम राहुल था। भोग विलास तथा मोहमाया के जाल को त्यागकर सिद्धार्थ ने बौद्ध धर्म की नींव रखी। जिस स्थान पर उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, उसे बोध गया कहा जाता है।

बौद्ध धर्म के सिद्धांत—भगवान बुद्ध के धार्मिक उपदेशों में चार आर्य सत्य सिद्धांत प्रसिद्ध हं। ये चार आर्य सत्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

1. दुख—(Home of suffering) संसार में सर्वत्र दुख है। जन्म, मरण, बुढ़ापा और रोग दुख हैं। प्रिय का वियोग और अप्रिय का संयोग दुख है। इच्छित वस्तु की प्राप्ति न होना भी दुख है। संसार का प्रत्येक प्राणी इस दुख से पीड़ित है।

2. दुख समुदाय (दुख का कारण) (Desires Generate Suffering)—बौद्ध धर्म के अनुसार तृष्णा, अतृप्त इच्छा आदि दुख के कारण हैं। इसी तृष्णा से मोह के कारण जीव संसार में आवागमन के चक्कर में फंसा रहता है। इसी तृष्णा से अहंकार, ममता, राग, द्वेष, कलह आदि दुख उत्पन्न होते हैं।

3. दुख निरोध (Suffering can be removed)—बुद्ध ने रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान के निरोध को ही दुख का निरोध माना। उसके अनुसार तृष्णा के विनाश से ही दुख का निवारण संभव है। सभी मनुष्य जीवन-मरण से छुटकारा पा सकता है। पुनर्जन्म तथा अन्य दुखों से मुक्ति की अवस्था निर्वाण कहलाती है।

4. दुख निरोधगामिमिनी प्रतिपदा (Adherence to Noble Path)—बुद्ध ने बतलाया कि यज्ञ, बलि, देवताओं की पूजा, प्रार्थना, मंत्रोच्चारण तथा तपस्या से निर्वाण की प्राप्ति संभव नहीं है। कठोर तपस्या द्वारा शरीर को कष्ट देने से भी निर्वाण की प्राप्ति संभव नहीं है। शाश्वत सुख की प्राप्ति हेतु उन्होंने मध्यम मार्ग को उचित बतलाया। मध्यम मार्ग से उनका मतलब था मनुष्य को न तो अधिक वासना में लिप्त होना चाहिए और न शरीर को अधिक कष्ट देना चाहिए। तृष्णा तथा अन्य दूषित संस्कारों के निवारण हेतु बुद्ध ने आठ मार्गों (अष्टांगिक मार्ग) का प्रतिपादन किया है। उनके द्वारा प्रतिपादित अष्टांगिम मार्ग निम्नलिखित हैं—

(i) सम्यक दृष्टि (Right View)—चार आर्य सत्यों को पहचानना ही सम्यक दृष्टि है। मनुष्य में सत्य-असत्य को पहचानने की शक्ति और पाप-पुण्य एवं सदाचार-दुराचार में विभेद करने का सामर्थ्य होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(ii) सम्यक संकल्प (Right Aspiration)—सम्यक संकल्प का तात्पर्य उनसे है जो लिप्सा और आसक्ति से छुटकारा दिलाए तथा सबके हृदय में सबके लिए प्रेम का भाव जगाये।

(iii) सम्यक वाक् (Right Speech)—सम्यक वाक् का तात्पर्य सत्य, विनम्रता तथा मृदुता से ओत प्रोत वाणी से है।

(iv) सम्यक कर्मात (Right Action)—सत्य कर्म ही सम्यक कर्मात है। प्रत्येक व्यक्ति को अहिंसा तथा सदाचार के नियमों का पालन करना चाहिए। ऐसा काम करना चाहिए जिससे दूसरों को लाभ हो।

(v) सम्यक आजीवन (Right Living)—जीवन के लिए अपवित्र तथा भ्रष्ट साधनों का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

(vi) सम्यक व्यायाम (Right Effort)—प्रत्येक व्यक्ति को बुरे विचारों से छुटकारा पाने के लिए मानसिक अभ्यास करना चाहिए तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान हेतु प्रयत्न करना चाहिए।

(vii) सम्यक स्मृति (Right Mindfulness) —मनुष्य को सदैव याद रखना चाहिए कि उनके सभी कार्य विवेक और सावधानी से हो। बौद्ध धर्म में यह स्मृति चार रूपों में उल्लेखित है—

(क) कायानुपश्यना—शरीर के प्रत्येक संस्कार तथा चेतना के प्रति जागरूक रहना

(ख) वेदानुपश्यना—सुख-दुख की अनुभूतियों के प्रति सजग रहना

(ग) चितानुपश्यना—चित के राग द्वेष को पहचानना

(घ) धर्मानुपश्यना—शरीर, मन और वचन की चेष्टा को समझना।

(viii) सम्यक समाधि (Rigth Contemplation)—जो शारीरिक बंधनों और मानसिक लगावों से उत्पन्न बुराइयों को दूर करे।

बुद्ध के अनुसार जो भी व्यक्ति उक्त अष्टांगी मार्गों के अनुसार आचरण एवं आवरण करेगा, उसे निर्वाण की प्राप्ति होगी। इसके लिए यज्ञ, बलि तथा पुरोहितों की मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं होगी।

अपने अनुयायियों के लिए बुद्ध ने एक आचार विधान भी तैयार किया था। इस आचार विधान में दस नैतिक उपदेशों का वर्णन है—

1. अस्तेय, 2. अहिंसा का पालन, 3. मद्यपान निषेध, 4. अपरिग्रह व्रत का पालन, 5. ब्रह्मचर्य का पालन, 6. नृत्य-गान का त्याग, 7. पुष्प तथा सुगंधित वस्तुओं का त्याग, 8. असमय भोजन का त्याग, 9. कोमल शैया का त्याग तथा 10. कामिनी कंचन का त्याग।

बुद्ध ने आत्मा तथा ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करते हुए पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत को स्वीकार किया। बुद्ध का मत था कि पुनर्जन्म आत्मा का नहीं वरन् अनित्य अहंकार का होता है। जब मनुष्य की तृष्णा और वासना नष्ट हो जाती है तब उसे निर्वाण प्राप्त होता है। बौद्ध धर्म में वेद की प्रामाणिकता को अस्वीकार किया गया है। यज्ञ, अनुष्ठान

Scanned with CamScanner

तथा धार्मिक आडंबर का विरोध किया गया है। ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जाति-पाति की भावना की निंदा की गयी है। बौद्ध धर्म में बौद्ध धर्म का मार्ग सभी जातियों के लिए खुला था। बौद्ध धर्म के द्वारा भारतीय समाज में धार्मिक तथा सामाजिक क्रांति लाने का प्रयास किया गया था।

बौद्ध धर्म के संप्रदाय—समय के साथ धार्मिक विषयों को लेकर बौद्ध धर्म दो संप्रदाय में विभाजित हो गया था। ये दो संप्रदाय—(i) हीनयान तथा (ii) महायान थे।

हीनयान में बौद्ध धर्म का मूलरूप पाया जाता है। यह जैन धर्म की भांति अनीश्वरवादी है। इसमें कम्म (कर्म) तथा धम्म (धर्म) को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। इस संप्रदाय के लोगों का मुख्य लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। पालि त्रिपिटक हीनयान का मुख्य ग्रंथ है। इस संप्रदाय का अधिक प्रचार दक्षिण में हुआ। वर्तमान में यह लंका, बर्मा और थाईलैंड में जीवित है। महायान संप्रदाय का निर्माण जनसाधारण के लिए किया गया था। क्योंकि हीनयान के आदर्शों का पालन जनसाधारण के लिए संभव नहीं था। महायान संप्रदाय में जनसाधारण की चिंता और प्रयास देखा गया है। महायान संप्रदाय करूणा पर विशेष बल देता है। प्राजापारमिता, दुखावती व्यूह, दशभूमिक सूत्र तथा समाधिकरण सूत्र महायानिक ग्रंथों में प्रसिद्ध है। महायान का प्रचार अधिकतर उत्तर भारत में हुआ है।

बौद्ध सभा—बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु चार बौद्ध सभाएं संपन्न हुई थीं। इन सभाओं के माध्यम से बुद्ध के उपदेशों का संग्रह, शुद्धि तथा समयानुसार संशोधन भी किया गया था। इसके परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म नया स्वरूप, नया जीवन तथा नया उत्साह पाकर बढ़ता गया। पहली बौद्ध सभा राजगृह में हुई थी। इसमें बुद्ध के उपदेशों का संकलन किया गया था। उन उपदेशों को उपदेश, साधन तथा सिद्धांत जैसे तीन भागों में त्रिपिटक नाम से रखा गया था। दूसरी सभा वैशाली में हुई थी, जिसमें इन ग्रंथों में सुधार हुआ। तीसरी सभा सम्राट अशोक द्वारा बुलायी गयी थी जिसमें बौद्ध साहित्य का अंतिम संकलन किया गया था। चौथी सभा कनिष्क के शासनकाल में हुई थी जिसमें प्राचीन बौद्ध ग्रंथों पर भाष्य लिखे गए।

बौद्ध धर्म के पतन का कारण—हमारे लिए यह आश्चर्य की बात है कि बौद्ध धर्म जनसाधारण में तेजी से लोकप्रिय हुआ, लेकिन शीघ्र ही अपनी जन्मभूमि से निर्वासित हो गया। बौद्ध धर्म के पतन के निम्नलिखित कारण थे—

1. अनीश्वरवादी तथा अनात्मावादी होने के कारण साधारण जनता में बौद्ध धर्म लोकप्रिय नहीं हो सका।

2. बौद्ध धर्म का विभिन्न संप्रदायों में विभाजन के कारण इसकी शक्ति क्षीण हुई।

3. आरंभ में बौद्ध धर्म मूर्ति पूजा विरोधी था, लेकिन कालांतर में इस धर्म में भी मूर्ति पूजा आरंभ तथा तंत्र-मंत्र पद्धति का प्रचलन भी हो गया। महायान संप्रदाय में बुद्ध की मूर्ति, पूजा तथ तंत्र-मंत्र की प्रधानता पायी जाती है।

4. ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान के कारण भी इस धर्म का पतन हुआ। शंकराचार्य तथा कुमारिल भट्ट जैसे विद्वानों ने ब्राह्मण धर्म के सिद्धांतों को पुनर्जीवन प्रदान किया। भगवान बुद्ध को विष्णु का अवतार माना गया।

Scanned with CamScanner

5. राजकीय संरक्षण के अभाव में भी बौद्ध धर्म को गहरा धक्का लगा। अहिंसक होने के कारण राजाओं का संरक्षण बाद में बौद्ध धर्म को नहीं मिल सका था।

6. बौद्धों ने आम जनता की भाषा पालि को त्यागकर संस्कृत भाषा को अपनाया था, जिसके कारण भी इस धर्म की अवनति हुई।

7. बौद्ध मठों तथा संघों में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण भी इस धर्म का पतन संभव हुआ है। बौद्ध बिहार में स्त्रियों के प्रवेश के कारण भिक्षुओं की विलासिता चरम सीमा पर पहुच गयी थी। नैतिकता नष्ट होने से बौद्ध धर्म को गहरा आघात पहुंचा।

8. विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा विहारों को नष्ट कर दिया गया था। इसके कारण भी बौद्ध धर्म को पतन का सामना करना पड़ा।

बौद्ध धर्म की देन—बौद्धधर्म अपनी जन्म भूमि से लुप्त होने के बावजूद भी भारतीय समाज एवं संस्कृति पर इस धर्म की अमिट छाप देखी जा सकती है। बौद्ध धर्म के प्रभाव को निम्नलिखित शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया जा सकता है—

1. धर्म का प्रभाव—बौद्ध धर्म के प्रभाव में आने से भारतीय समाज में प्रचलित कर्मकांड, बलि तथा यज्ञ पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बौद्ध धर्म के अहिंसा का व्यापक प्रभाव है। अहिंसा के उपदेशों को अपनाने के फलस्वरूप हिन्दू समाज में पशुओं की बलि प्रथा समाप्त हुई। यज्ञ में बलि देने की प्रथा का अंत हुआ। समाज में निरामिष भोजन की ओर आकर्षण बढ़ा है। भगवान बुद्ध को विष्णु का अवतार माना गया है। वैष्णव लोग निरामीष भोजन करते हैं। शाकाहारी भोजन करने वालों की संख्या में वृद्धि बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाता है। साधु तथा साधु जीवन का हिन्दू समाज में आगमन बौद्ध धर्म के प्रभाव को प्रस्तुत करता है। बौद्ध भिक्षुओं से प्रभावित होकर वैष्णव, शैव तथा शाक्त संप्रदाय के साधु हिन्दू समाज में अस्तित्व में आए। बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण हिन्दू समाज में प्रचलित कई प्रकार की धार्मिक कुरीतियों का अंत हुआ। पुजारियों का वर्चस्व समाप्त हुआ तथा पुजारियों द्वारा कर्मकांड तथा यज्ञ के नाम पर शोषण का अंत हुआ।

2. राजनीतिक जीवन पर प्रभाव—भारतीय समाज में जाति प्रथा, ऊंच-नीच के भेदभाव, सामाजिक असमानता इत्यादि को समाप्त करने की दिशा में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। बौद्ध धर्म के अस्तित्व में आने से पहले पेशा पर आधारित वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित सामाजिक व्यवस्था का रूप धारण कर ली थी। भारतीय समाज में विभिन्न जातियों के कई स्तर बन गए थे। उनमें ऊंच-नीच के भेदभाव उत्पन्न हो गए थे। महिलाओं तथा शूद्रों एवं गरीब वैश्यों का समाज में कोई स्थान नहीं था। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। उन्हें कई प्रकार के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा जाता था। इन लोगों द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया गया था, क्योंकि बौद्ध धर्म के अष्टांगिका मार्ग नैतिकता से ओत-प्रोत हैं। आज भी भारतीय समाज में उन आठ अष्टांगिक मार्गों का प्रभाव परिलक्षित होता है।

3. बौद्धिक स्वतंत्रता एवं साहित्य पर प्रभाव—बौद्ध धर्म के कारण भारतीय समाज में साहित्य एवं चिंतन के क्षेत्र में नवजागरण आया। अंधविश्वास का स्थान तर्क एवं

Scanned with CamScanner

ज्ञान ने लिया। इससे लोगों में आत्म-विश्वास पैदा हुआ। बौद्धों ने अपने धर्म प्रचार के लिए नवीन साहित्य का सृजन किया। उनकी रचनाओं में पाली भाषा का साहित्य समृद्ध हुआ। बौद्धों ने कुछ प्रसिद्ध अपभ्रंश कृतियों की रचना की थी। ललित विस्तार, मिलिन्द पनही, महावस्तु, मंजुश्री मूल कल्प, दिव्या बदान, सारि पुत्र-प्रकरण, बुद्ध चरित्र एवं जातक कथाएं बौद्ध धर्म की अमूल देन हैं। बौद्ध विहार शिक्षा के केंद्र थे। बिहार में नालंदा तथा विक्रमशीला एवं गुजरात में बल्लमी प्रसिद्ध विद्या केंद्र थे। नागार्जुन, वसुमित्र, दिनांग तथा धर्मकीर्ति ने विद्या तथा ज्ञान की प्रगति में योगदान दिया।

4. कला पर प्रभाव—भारतीय कला भी बौद्ध धर्म से प्रभावित हुई। बौद्ध धर्म से प्रभावित वास्तु कला, मूर्ति कला और चित्रकला के अनेक उदाहरण उपलब्ध है। सांची, भरहुत और नागार्जून के स्तूप, अजंता एवं एलोरा के भीत्ति-चित्र, गुफाओं में बने मंदिर तथा अशोक स्तंभ भारतीय कला के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं। बौद्ध मंदिरों, स्तूपों तथा मूर्त्तियों के निर्माण से वास्तुकला और मूर्तिकला के क्षेत्र में नई शैलियों का विकास हुआ। जिसे गंधार कला के नाम से जाना जाता है। बौद्ध धर्म का विस्तार विदेशों में भी हुआ। थाईलैंड, कंबोडिया, जावा, सुमात्रा, बर्मा, श्रीलंका, तिब्बत और नेपाल की संस्कृति पर भारतीय संस्कृति की स्पष्टत: छाप मिलती है।

5. आर्थिक जीवन पर प्रभाव—बौद्ध धर्म के अस्तित्व में आने से पहले व्यापारियों और कुलीनों के पास आपार संपत्ति एकत्र हो गयी थी। इससे सामाजिक तथा आर्थिक विषमता उत्पन्न हो गयी थी। बौद्ध धर्म में धन संग्रहण करने पर जोर दिया गया। बौद्ध धर्म के अनुसार हिंसा, क्रूरता और घृणा के कारण गरीबी है। किसानों को बीज, व्यापारियों को धन तथा मजदूरों को मजदूरी मिलनी चाहिए। बौद्ध आचार संहिता में विलास प्रियता पर रोक लगायी गयी थी। कर्जदार तथा दासों को बौद्ध धर्म में प्रवेश का अधिकार नहीं था।

जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म में समानता—1. जैन और बौद्ध दोनों धर्म की उत्पत्ति वैदिक कर्मकांड और यज्ञ विधान की प्रतिक्रिया से हुई है। दोनों धर्मों में ब्राह्मण, यज्ञ, बलि एवं कर्मकांड का विरोध किया गया है।

2. दोनों धर्मों में पुनर्जन्म, कर्म तथा निर्वाण के सिद्धांत को स्वीकार किया गया है।

3. दोनों धर्मों के प्रवर्तक क्षत्रिय राजवंश के थे तथा दोनों धर्मों ने संस्कृत को छोड़ कर लोक भाषा को अपनाया गया है।

4. दोनों धर्म में तर्क की प्रधानता को स्वीकार की गयी है।

जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म में अंतर—1. जैन धर्म में त्याग और आत्मपीड़न पर विशेष बल दिया गया है, जबकि बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग को अपनाया गया है।

2. जैन धर्म में दिव्य शक्ति की सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है, जबकि बौद्ध धर्म में दिव्य शक्ति की सत्ता को स्वीकार किया गया है।

3. जैन धर्म की मूल पुस्तकें प्राकृत भाषा में है, जबकि बौद्ध धर्म की पुस्तकें पाली भाषा में है।

Scanned with CamScanner

4. बौद्ध धर्म जैन धर्म की तुलना में ज्यादा परिवर्तनशील था। इसलिए उसका विकास विदेशों में भी हुआ।

Scanned with CamScanner